Toppersnotes
Unleash the topper in you

SUPER-TET

Uttar Pradesh Basic Education Board

परीक्षा नियामक प्राधिकारी, उ.प्र.

एडेड जूनियर हाई स्कूल

सहायक अध्यापक/प्रधानाध्यापक
(सामाजिक अध्ययन)

पेपर - 2 || भाग - 3

सामान्य अध्ययन – 1

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

इतिहास
प्राचीन भारत का इतिहास

1. इतिहास को जानने के स्त्रोत	1
2. सिन्धु घाटी सभ्यता	16
3. वैदिक काल	22
4. बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म	28
5. महाजनपद काल एवं मगध	35
6. ईसा पू. के विदेशी आक्रमण	37
7. मौर्यकाल	38
8. मौर्योत्तर काल	44
9. गुप्तकाल	47
10. गुप्तोतर काल	53
11. संगम काल	54
12. चोल वंश	58

मध्यकालीन भारत

13. भारत पर मुस्लिम आक्रमण (अरब, तुर्क, अफगान)	61
14. सल्तनत काल	63
15. मुगल काल	75
16. संगम वंश (विजयनगर)	91
17. प्रमुख दक्कन के साम्राज्य	94
18. धार्मिक सामाजिक सुधार आन्दोलन	96
19. मराठा उत्कर्ष	101

आधुनिक भारत का इतिहास

20. यूरोपीयन शक्तियों का भारत आगमन	103
21. उत्तरकालीन मुगल सम्राट	106
22. बंगाल और अंग्रेज	107

23.आंग्ल मराठा संघर्ष 109
24.देशी राज्यों के प्रति अंग्रेजों की नीति 117
25.कुटीर उद्योगों का पतन एवं भू राजस्व नीतियां 118
26.अंग्रेजों के न्यायिक सुधार 121
27.भारत में अंग्रेजों की आर्थिक नीति 122
28.आंग्ल-मैसूर संघर्ष 124
29.सिक्ख आंग्ल संघर्ष 124
30.गवर्नर जनरल 126
31.भारत के गवर्नर जनरल 128
32.भारत के वायसराय 130
33.1857 की क्रान्ति 133
34.भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह 136
35.किसान आन्दोलन 139
36.धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन 140
37.राष्ट्रीय आन्दोलन 146
(प्रमुख अधिनियम, आन्दोलन, नेतृत्वकृता एवं संगठन)
38.भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन 168
39.भारत में साम्यवादी आन्दोलन 171
40.भारत में समाजवाद 172
41.महत्वपूर्ण प्रेस एक्ट का विकास 173
42.प्रमुख व्यक्तित्व 176
43.कम्पनी द्वारा लाए गए एक्ट 177
44.साम्यवादी मुकदमें एवं आजाद हिन्द फौज 178

उत्तरप्रदेश का आधुनिक इतिहास

---

1. 1857 कि क्रान्ति 181
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 184
3. खिलाफत आंदोलन 184
4. उत्तरप्रदेश के स्वतंत्रता सेनानी 184
5. सविनय अवज्ञा आंदोलन 189
6. किसान आंदोलन 190

7. 1937 का प्रांतीय मंत्रिमण्डल 191
8. भारत छोडो आंदोलन 192
9. स्वतंत्रता पश्चात् वर्तमान स्वरूप 192

उत्तरप्रदेश का भूगोल

1. भौगोलिक विस्तार 195
2. जलवायु 197
3. मृदाएँ 199
4. कृषि का महत्व 202
5. खनिज 203
6. अभ्यारण्य 207
7. नदियां 211

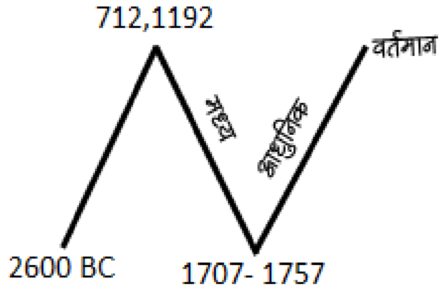

कालक्रम

1. 2600 BC – 1900 BC
   सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900 BC – 1500 BC
   ----
3. 500 BC – 1000 BC
   ऋग्वैदिक काल
4. 1000 BC – 600 BC
   उत्तरवैदिक काल
5. 600 BC – 321 BC
   महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321 BC – 184 BC
   मौर्य काल
7. 184 BC – 321 AD
   मौर्योत्तर काल
8. 319 AD – 550 AD
   गुप्तकाल
9. 606 AD – 647 AD
   हर्षवर्द्धन
10. 750 AD – 1000 AD
    राजपूत काल
11. 1192 (1206) – 1526 AD
    सल्तनत काल
12. 1526 AD – 1707 (1858)
    मुगल काल
13. 1707 (1757) – वर्तमान
    आधुनिक काल

प्राचीन काल में भारत

इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोटस ने इतिहास की प्रथम पुस्तक "हिस्टोरिका" लिखी ।
- हैरोडोटस को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।

1. पुरातात्विक स्त्रोत
2. साहित्य स्त्रोत
3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत अनेक और विविध प्रकार के हैं। हमारे इतिहास के स्रोतों के क्षेत्र में किसी नदी के तट पर एक निर्जन टीले को खोदकर निकाले गए प्रागैतिहासिक काल के मनुष्य द्वारा पत्थर को काटकर बनाए गए गैंडासों से लेकर भव्य इमारतों के भग्नावशेषों और राजकवि बाण के श्हर्षचरितश् तक सभी प्रकार की चीजें शामिल हैं। अपने अध्ययन की सुविधा के उद्देश्य से हम उन्हें मोटे मोटे रूप से दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं- एक तो साहित्यिक और दूसरा परातत्त्व संबंधी सामग्री। इन दो श्रेणियों को फिर और छोटी-छोटी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

पुरातात्त्विक स्रोत

अभिलेख

- *प्राचीन भारत के अधिकांश अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तंभों, ताम्रपत्रों दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।*
- *सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगजकोई से प्राप्त अभिलेख हैं। इस पर वैदिक देवता-मित्र, वरुण, इंद्र और नासत्य के नाम मिलते हैं। इनसे ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में मदद मिलती है।*
- *भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो* 300 *ई. पू. के लगभग हैं। डी.आर. भंडारकर नामक विद्वान ने केवल अभिलेखों के आधार पर ही अशोक का इतिहास लिखने का सफल प्रयास किया है।*
- *अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा अरमाइक लिपियों में मिले हैं।*
- *मास्की, गुर्जरा, निटूर एवं उदेगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है तथा अन्य अभिलेखों में उसे 'देवानांपिय पियदसि' (देवों का प्यारा) कहा गया है।*
- *सर्वप्रथम* 1837 *ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेख को पढ़ा था।*
- *अशोक के बाद भी अभिलेखों की परम्परा कायम रही। अब हमें अनेक प्रशस्तियाँ मिलने लगीं जिनमें दरबारी कवियों अथवा लेखकों द्वारा अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा के शब्द मिलते हैं। इनसे संबंधित शासकों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं, जिनमें प्रमुख हैं-*

अभिलेख	***शासक***	***विषय***
हाथीगुम्फा अभिलेख	*खारवेल*	*खारवेल के शासन की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण*
जूनागढ़ अभिलेख (गिरनार अभिलेख)	*रुद्रदामन*	*इसमें रुद्रदामन की विजयों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवरण प्राप्त होता है।*
नासिक अभिलेख	*गौतमी बलश्री (रचनाकार)*	*सातवाहनकालीन घटनाओं का विवरण (गौतमीपुत्र शातकर्णी से संबंधित)*
प्रयाग स्तंभ लेख	*समुद्रगुप्त*	*इसके विजय एवं नीतियों का पूरा विवरण*
ऐहोल अभिलेख	*पुलकेशिन द्वितीय*	*हर्ष एवं पुलकेशिन द्वितीय के युद्ध का विवरण*
भीतरी स्तंभ लेख	*स्कंदगुप्त*	*इसके जीवन की अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण*
मंदसौर अभिलेख	*मालवा नरेश यशोधर्मन*	*सैनिक उपलब्धियों का वर्णन*

- *गैर-सरकारी लेखों में यवन राजदूत हेलियोडोरस का वेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुड स्तम्भ लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिससे द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में मध्य भारत में भागवत धर्म विकसित होने का प्रमाण मिलता है।*

नोटः *अभिलेखों के अध्ययन को 'एपिग्रेफी' कहा जाता है।*

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्रोत

- पुरातात्त्विक स्रोत
  - अभिलेख
  - स्मारक एवं भवन
  - सिक्के
  - मूर्तियाँ
  - चित्रकला
  - मुहरें
- साहित्यिक स्रोत
  - भारतीय साहित्य
    - धार्मिक साहित्य
      - ब्राह्मण साहित्य
        - वेद
          - ऋग्वेद
          - यजुर्वेद
          - सामवेद
          - अथर्ववेद
        - ब्राह्मण ग्रंथ
          - ऐतरेय
          - कौषितकी
          - गोपथ आदि।
        - आरण्यक
          - तैत्तिरीय
          - मैत्रायणी
          - ऐतरेय आदि।
        - उपनिषद
          - छांदोग्य
          - कठ
          - बृहदारण्यक
          - आदि।
        - वेदांग
          - शिक्षा
          - कल्प
          - व्याकरण
          - निरुक्त
          - छंद
          - ज्योतिष
        - उपवेद
          - आयुर्वेद
          - धनुर्वेद
          - गंधर्ववेद
          - शिल्पवेद आदि।
        - षड्दर्शन
          - सांख्य
          - योग
          - न्याय
          - वैशेषिक
          - पूर्वमीमांसा
          - उत्तर मीमांसा
        - महाकाव्य
          - रामायण
          - महाभारत
        - पुराण
          - विष्णु पुराण
          - भागवत पुराण
          - शिव पुराण
          - गरुणपुराण आदि।
        - स्मृति
          - मनुस्मृति
          - नारद स्मृति
          - याज्ञवल्क्य स्मृति आदि।
      - बौद्ध साहित्य
        - सुत्तपिटक
        - विनयपिटक
        - अभिधम्मपिटक
        - मिलिंदपन्हो
        - बुद्धचरित
        - दिव्यावदान आदि।
      - जैन साहित्य
        - परिशिष्टपर्वन
        - भद्रबाहुचरित
        - भगवतीसूत्र
        - कल्पसूत्र आदि।
    - धर्मनिरपेक्ष साहित्य
      - कौटिल्य का अर्थशास्त्र
      - कल्हण की राजतरंगिणी
      - पाणिनी का अष्टाध्यायी
      - विशाखदत्त का मुद्राराक्षस
      - कालिदास का अभिज्ञान शाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम्, रघुवंश, मेघदूत
      - बाणभट्ट का हर्षचरित, कादंबरी आदि।
    - संगम साहित्य
      - तिरुकुरल
      - शिलप्पादिकारम्
      - मणिमेखलै
      - जीवक चिंतामणि आदि।
  - विदेशी साहित्य (विदेशी यात्रियों के विवरण)
    - यूनान एवं रोम के लेखक
      - मेगस्थनीज
      - टॉलेमी
      - हेरोडोटस
      - नियार्कस
      - अरिस्टोबुलस आदि।
    - चीनी लेखक
      - फाहियान
      - ह्वेनसांग
      - इत्सिंग आदि।
    - अरबी लेखक
      - अल सुलेमान
      - अल-मसूदी
      - इब्नबतूता आदि।

स्मारक और भवन

- स्मारक और भवनों से जनता की आध्यात्मिकता तथा धर्मनिष्ठा का ज्ञान होता है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त भवनों से 5500 वर्ष पुरानी सैंधव सभ्यता का पता चला है। (नवीन शोध के अनुसार, सिंधु घाटी सभ्यता लगभग 8000 साल पुरानी है।)
- अतरंजीखेड़ा आदि की खुदाईयों से पता चलता है कि देश में लोहे का प्रयोग ईसा पूर्व 1000 के लगभग प्रारंभ हो गया था।
- प्राचीन काल में भारत में भारी संख्या में मंदिरों का निर्माण हुआ, जिनके अवशेष बिखरे रूप में पूरे देश में हैं।
- महलों और मंदिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- विभिन्न स्थानों से प्राप्त मंदिर, जैसे- देवगढ़ का दशावतार मंदिर (झाँसी), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर), अजंता की गुफाओं के चित्र, सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की ताम्रमूर्ति आदि से हिंदू कला एवं सभ्यता के पर्याप्त विकसित होने के प्रमाण मिलते हैं।
- उत्तर भारत के मंदिर 'नागर शैली', मध्य भारत के मंदिर 'बेसर शैली' तथा दक्षिण भारत के मंदिर 'द्रविड़ शैली' से निर्मित हैं।
- दक्षिण भारत में तजौर का राजराजेश्वर मंदिर द्रविड़ शैली तथा उत्तर भारत में खजुराहो का कन्दरिया महादेव का मंदिर नागर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- भारत के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक द्वीपों से हिंदू संस्कृति से संबंधित स्मारक मिलते हैं। इनमें मुख्य रूप से जावा का टबोरोबुदुर स्तूप (महायान बौद्ध स्तूप) तथा कम्बोडिया के अंकोरवाट मंदिर का उल्लेख किया जा सकता है।

सिक्के

- अभिलेख, स्मारक और भवन के अतिरिक्त प्राचीन राजाओं द्वारा ढलवाए गए सिक्कों से भी प्रचुर ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध होती है।
- साधारणतया 206 ई.पू. से लेकर 300 ई. तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुख्य रूप से मुद्राओं की सहायता से ही होता है। कुछ प्राप्त मुद्राओं में तिथियाँ भी खुदी हैं जो कालक्रम निर्धारण में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई हैं।
- पुराने सिक्के तांबा, चांदी, सोना और सीसा धातु के बनते थे।
- प्राचीनतम सिक्कों को 'आहत सिक्के' कहा जाता है। आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के ई. पू. पाँचवीं सदी के हैं। ठप्पा मारकर बनाए जाने के कारण ही भारतीय भाषाओं में इन्हें 'आहत मुद्रा' कहते हैं।
- पंचमार्क या आहत सिक्कों पर पेड़, मछली, साँड, हाथी, अर्द्धचंद्र आदि के चिहन बने होते थे।
- सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में बने हैं, जो मुख्यतः सीसे, चांदी, तांबा एवं सोने के हैं।
- सातवाहनों ने सीसे तथा गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किये।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों ने किया।
- समुद्रगुप्त की वीणा बजाते हुए मुद्रा वाले सिक्के से उसके संगीत प्रेमी होने का प्रमाण मिलता है।

नोटः सिक्कों के अध्ययन को 'न्यूमिस्मेटिक्स' कहा जाता है।

मूर्तियाँ

- प्राचीन भारतीय इतिहास में मूर्तियों का निर्माण कुषाण काल से आरंभ होता है।
- कुषाणकालीन मूर्तियों पर वैदेशिक प्रभाव है, जबकि मथुरा कला पूर्णतः स्वदेशी है।
- भरहुत, बोधगया, साँची तथा अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की अति सजीव झलक देखने को मिलती है।

चित्रकला

- अजंता के चित्रों में मनोभावों की सुंदर झलक मिलती है। चित्रकला में 'माता और शिशु' तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों से गुप्त काल की कलात्मक उन्नति का पूर्ण आभास होता है।
- बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो अजंता में है।

मुहरें

- अवशेषों से प्राप्त मुहरों से प्राचीन भारत का इतिहास लिखने में बहुत सहायता मिलती है।
- मुहरों से व्यापारिक, धार्मिक, आर्थिक जीवन के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों में बने धार्मिक प्रतीकों से उनके धार्मिक अवस्थितियों का ज्ञान होता है।

साहित्यिक स्रोत

- साहित्यिक स्रोत के अंतर्गत हम धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य का अध्ययन करते हैं। धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर ग्रंथों की चर्चा की जाती है।
- ब्राह्मण ग्रंथों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृति ग्रंथ आते हैं, जबकि ब्राह्मणेत्तर ग्रंथों में बौद्ध तथा जैन साहित्यों से संबंधित रचनाओं का उल्लेख किया जाता है।
- लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथों, जीवनियाँ, यात्रा-वृत्तांत, कल्पना-प्रधान तथा गल्प साहित्य का वर्णन किया जाता है।

इनका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है-

<u>ब्राह्मण साहित्यः</u>

वेद

- वेदों के द्वारा प्राचीन आर्यों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एव राजनीतिक जीवन के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है। वैदिक युग की सांस्कृतिक दशा के ज्ञान का एकमात्र स्रोत वेद है।
- वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद।

ऋग्वेद (1500 ई.पू. 1000 ई.पू.)

- यह सबसे प्राचीनतम वेद माना जाता है।
- यह एक ऐसा वेद है जो ऋचाओं में बद्ध है।
- ऋग्वेद में कुल 10 मंडल. 1028 सूक्त एवं 10]580 ऋचाएँ हैं। इस वेद के पढ़ने वाले ऋषि को 'होतृ' कहते हैं। ऋग्वेद का पहला एवं 10वाँ मंडल सबसे अंत में जोड़ा गया है।

- ऋग्वेद के तीसरे मंडल में सूर्य देवता 'सविता' को समर्पित प्रसिद्ध गायत्री मंत्र है।
- 9वें मंडल में देवता सोम का उल्लेख है तथा 10वाँ मंडल चार्तुवर्ण्य समाज की संकल्पना का आधार है।
- ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रंथ हैं- ऐतरेय एवं कौषितकी अथवा शंखायन।

नोटः संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा 'ऋग्वेद' को विश्व मानव धरोहर के साहित्य में शामिल किया गया है।

यजुर्वेद

- इसमें यज्ञों के नियमों या विधानों का संकलन मिलता है। यही कारण है कि इसे कर्मकांडीय वेद भी कहा जाता है।
- यजुर्वेद पद्य एवं गद्य दोनों में है। यजुर्वेद के दो भाग हैं-शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद केवल पद्य में है जबकि कृष्ण यजुर्वेद, गद्य एवं पद्य दोनों में है।
- यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाला पुरोहित 'अध्वर्यु' कहलाता है।
- यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद- कठोपनिषद, इशोपनिषद, श्वेताश्वरोपनिषद तथा मैत्रायणी उपनिषद हैं।
- यजुर्वेद का अंतिम अध्याय ईशावास्य उपनिषद है, जिसका संबंध आध्यात्मिक चिंतन से है।
- यजुर्वेद के दो ब्राह्मण ग्रंथ हैं शतपथ एवं तैत्तरीय।

सामवेद

- 'साम' का अर्थ 'गान' होता है। इसमें मुख्यतः यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इसे भारतीय संगीत का जनक कहा जाता है। सात स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) की उत्पत्ति इसी से हुई।
- सामवेद में कुल 1875 ऋचाएँ हैं।
- सामवेद के मंत्रों को गाने वाला 'उद्‌गाता' कहलाता है। इसमें मुख्यतः सूर्य स्तुति के मंत्र हैं।
- सामवेद के प्रमुख उपनिषद- छांदोग्य तथा जैमिनीय हैं।
- सामवेद का ब्राह्मण ग्रंथ- पंचविश ब्राह्मण, षडविश ब्राह्मण है।

अथर्ववेद

- इसकी रचना अथर्व तथा अंगिरस ऋषि द्वारा सभी ग्रंथों के बाद में की गई। इसीलिये इसे 'अथर्वागिरस वेद' भी कहा जाता है। इसमें 731 सूक्त, 20 अध्याय तथा लगभग 6000 मंत्र हैं।
- इसमें ब्रह्म ज्ञान, धर्म, समाजनिष्ठा, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, जादू-टोना, तंत्र-मंत्र आदि अनेक विषयों का वर्णन है।
- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथ 'गोपथ' है।
- अथर्ववेद के उपनिषद - मुंडकोपनिषद, प्रश्नोपनिषद तथा मांडूक्योपनिषद।
- मुंडकोपनिषद से ही भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' लिया गया है।
- इसमें सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।

नोटः इन चार वेदों को 'संहिता' कहा जाता है।

ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद

- 'संहिता' के पश्चात् ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद का स्थान है। इनसे उत्तर वैदिककालीन समाज तथा संस्कृति के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- ब्राह्मण ग्रंथ वैदिक संहिताओं की व्याख्या के लिये गद्य में लिखे गए हैं। प्रत्येक संहिता के लिये अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ लिखे गए हैं. जो तालिका में क्रमशरू उल्लिखित हैं।

ऋग्वेद	ऐतरेय एवं कौषितकी ब्राह्मण
यजुर्वेद	शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	पंचविश एवं षडविश ब्राह्मण
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण

वेदांग तथा सूत्र

- वेदों को भली-भाँति समझने के लिये छः वेदागों की रचना की गई शिक्षा (उच्चारण विधि) ज्योतिष (भाग्यफल), कल्प (कर्मकाण्ड), व्याकरण (शब्द व्युत्पत्ति), निरुक्त (भाषा विज्ञान) तथा छत (चतुष्पदी श्लोक)। ये वेदों के शुद्ध उच्चारण तथा यज्ञादि करने में सहायक थे।
- इसी प्रकार, वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिये सूत्र साहित्य का प्रणयन किया गया। श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र तथा धर्मसूत्रों के अध्ययन से हम यज्ञीय विधि-विधानों, कर्मकाण्डों तथा राजनीति, विधि एवं व्यवहार से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करते हैं।

महाकाव्य

- वैदिक साहित्य के बाद भारतीय साहित्य में महाकाव्यों का समय आता है। इसमें रामायण और महाभारत प्रमुखतः शामिल हैं।
- रामायण हमारा आदिकाव्य हे जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने को थी। इससे हमें हिन्दुओं तथा यवनों और शकों के संघर्ष का वर्णन मिलता है।
- महाभारत की रचना वेदव्यास ने की थी। इसमें प्राचीन भारतवर्ष की सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक दशा का वर्णन मिलता है।
- ऐतिहासिक दृष्टि से महाकाव्यों को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता, क्योंकि इसमें वर्णित कथाओं में कल्पना का समावेश अधिक होता है।

पुराण

- पुराणों में प्राचीन भारतीय इतिहास का अच्छा क्रमबद्ध वर्णन मिलता है।
- पुराणों की संख्या 18 हैं।
- पुराणों के रचयिता एवं संकलनकर्ता लोमहर्ष तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा को माना जाता है।
- पुराणों में मत्स्यपुराण सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक है।
- पुराण प्राचीन काल से लेकर गुप्त काल तक की ऐतिहासिक घटनाओं का परिचय कराते हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के पहले के प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिये तो पुराण ही एकमात्र स्रोत हैं।

ब्राह्मणेत्तर साहित्य

बौद्ध साहित्य

- भारतीय इतिहास के साधन के रूप में बौद्ध साहित्य का विशेष महत्त्व है। बौद्ध साहित्य गंथो में श्त्रिपिटक सबसे महत्त्वपूर्ण है।
- 'त्रिपिटक' बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन है। इसे तीन भागों में विभाजित किया गया है- विनयपिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्मपिटक।
- विनयपिटक, संघ संबंधी नियम तथा आचार संबंधी शिक्षाओं का संग्रह है। सुत्तपिटक, धार्मिक सिद्धांत तथा धर्मोपदेश का संग्रह है। वहीं, अभिधम्मपिटक दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है।
- बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए। बौद्ध ग्रंथों से संबंधित जातकों में बुद्ध से संबंधित घटनाओं का वर्णन है।
- 'दीपवंश' तथा 'महावंश' नामक दो पालि ग्रंथों से मौर्यकालीन इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है।
- नागसेन द्वारा रचित 'मिलिंदपन्हो' पालि भाषा में रचित महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें हिन्द-यवन शासक मिनाण्डर के विषय में सूचनाएँ मिलती है।
- बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय का प्रमुख ग्रंथ 'कथावस्तु' है जिसमें महात्मा बुद्ध का जीवनचरित अनेक कथानकों के साथ वर्णित है।
- महायान संप्रदाय के ग्रंथ 'ललितविस्तर', 'दिव्यावदान' आदि हैं। ललितविस्तर में बुद्ध को देवता मानकर उनके जीवन तथा कार्यों का चमत्कारिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। दिव्यावदान से अशोक के उत्तराधिकारियों से लेकर पुष्यमित्र शुंग तक के शासकों के विषय में सूचना मिलती है।

जैन साहित्य

- जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है। जैन ग्रंथों में परिशिष्टपर्वन, भद्रबाहुचरित, आचरांगसूत्र, भगवतीसूत्र, कालिका पुराण आदि प्रमुख हैं।
- जैन धर्म का प्रारंभिक इतिहास, 'कल्पसूत्र' से ज्ञात होता है, जिसकी रचना भद्रबाहु ने की थी।

लौकिक साहित्य

- लौकिक साहित्य के अंतर्गत ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रंथों तथा जीवनियों का विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है।
- ऐतिहासिक रचनाओं में 'अर्थशास्त्र' का विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है। अर्थशास्त्र की रचना चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री कौटिल्य ने की थी। इसमें चंद्रगुप्त मौर्य की शासन-व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।
- कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' भी विशेष उल्लेखनीय है। यह संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास है। इसमें आदिकाल से लेकर 1151 ई. के आरम्भ तक के कश्मीर के प्रत्येक शासक के काल की घटनाओं का क्रमानुसार वर्णन दिया गया है।
- अर्द्ध-ऐतिहासिक रचनाओं में पाणिनी की अष्टाध्यायी, कात्यायन की वर्तिका, पतंजलि का महाभाष्य, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस तथा कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् आदि उल्लेखनीय हैं।
- ऐतिहासिक जीवनियों में अश्वघोष कृत बुद्धचरित, बाणभट्ट का हर्षचरित, वाक्पति का गौडवहो, विल्हण का विक्रमांकदेवचरित संध्याकर नन्दी कृत 'रामचरित', हेमचंद्र कृत 'कुमारपालचरित', जयानक कृत 'पृथ्वीराज विजय' आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ

रचना	रचनाकार	विशेष तथ्य
अष्टाध्यायी	पाणिनी	व्याकरण ग्रंथ
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	मौर्य काल के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है।
महाभाष्य (अष्टाध्यायी पर टीका)	पतंजलि	पुष्यमित्र शुंग के विषय में जानकारी
कथासरित्सागर	सोमदेव	मौर्य काल के विषय में जानकारी मिलती है।
बृहत्कथामंजरी	क्षेमेंद्र	मौर्य काल के विषय में जानकारी मिलती है।
अर्थशास्त्र (विषय-राजनीति)	कौटिल्य	मौर्य काल के बारे में प्रकाश पड़ता है।
नीतिसार	कामंदक	गुप्तकालीन राजतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है।
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	शंग वशे के बारे में जानकारी
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्तकालीन समाज का वर्णन
हर्षचरित	बाणभट्ट	हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन
रामचरित	संध्याकर नंदी	बंगाल के शासक रामपाल की जीवनकथा
पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन
राजतरंगिणी	कल्हण	कश्मीर के राजवंशों की क्रमबद्ध जानकारी

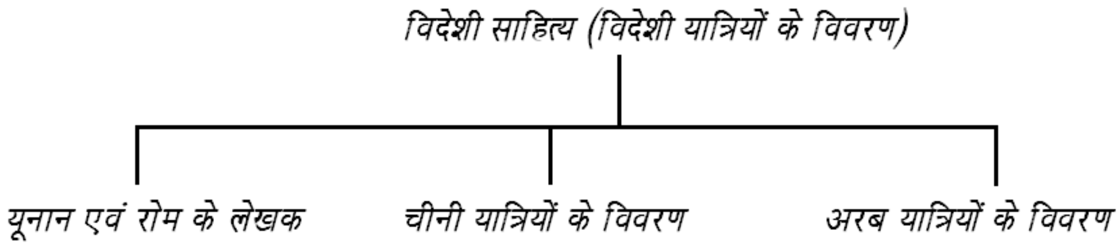

यूनान एवं रोम के लेखक

- यूनान के प्राचीन लेखकों में टेसियस तथा हेरोडोटस के नाम प्रसिद्ध हैं।
- टेसियस - ईरान का राजवैद्य था। टेसियस के वर्णन में अधिकांशतरू कल्पित कहानियाँ हैं, जो पूर्णतः अविश्वसनीय हैं।
- हेरोडोटस- 'हेरोडोटस' को 'इतिहास का पिता' कहा जाता है। इसने 5वीं सदी ई. पू. 'हिस्टोरिका' की रचना की थी। इसमें भारत-फारस के संबंधों का वर्णन किया गया है।
- सिकंदर के साथ आने वाले लेखक थे- नियार्कस, अहनेसिक्रिटस और अरिस्टोबुलस।
- सिकंदर के पश्चात् के लेखकों में तीन राजदूतों- मेगस्थनीज, डाइमेकस तथा डायोनीसियस के नाम उल्लेखनीय हैं।
- मेगस्थनीज ने 'इंडिका' की रचना की, जो सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था। मेगस्थनीज ने 'इंडिका' में मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति के विषय में लिखा है।
- डाइमेकस- यह सीरियन नरेश अत्तियोकस का राजदूत था। यह बिंदुसार के राजदरबार में आया था।
- डायोनिसियस- यह मिस्र नरेश टहलेमी फिलाडेल्फस का राजदूत था, जो बिंदुसार (अन्य स्रोतों में अशोक भी पढ़ने में मिलता है) के राजदरबार में आया था।

- प्लिनी- इसने पहली सदी में 'नेचुरल हिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखी, - जिसमें भारत के पशुओं, पौधों और खनिज पदार्थों की जानकारी मिलती है।
- टहलेमी की पुस्तक 'ज्योग्राफी' और किसी अज्ञात लेखक की पुस्तक - 'पेरिप्लस अहफ द एरिथ्रियन सी' महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इनसे भारत के भूगोल तथा व्यापारिक वस्तुओं के बारे में जानकारी मिलती है।

चीनी यात्रियों के विवरण

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों में चीनी यात्रियों के यात्रा-वृत्तांत भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये चीनी यात्री बौद्ध मतानुयायी थे तथा भारत में बौद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा तथा बौद्ध धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये आए थे। इनमें प्रमुख थे-

- फाहियान- यह 5वीं सदी के प्रारंभ में चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के शासनकाल में भारत आया था। इसने भारतीय समाज, यहाँ की संस्कृति एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।
- ह्वेनसांग- यह 7वीं सदी में हर्षवर्धन के समय भारत आया था। इसकी रचना 'सी-यू-की' है।
- इत्सिंग- यह वीं सदी के अंत में भारत में आया था। इसने अपने विवरण में नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा अपने समय के भारत का वर्णन किया है।

अरब यात्रियों के विवरण

अरब व्यापारियों तथा लेखकों के विवरणों से हमें पूर्व मध्यकालीन व समाज एवं संस्कृति के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। इन लेखकों में अलबरूनी और इब्नबतूता का नाम सर्वप्रथम है।

अलबरूनी

यह 11वीं सदी में महमूद गज़नवी के साथ भारत आया था। अरबी में लिखी गई उसकी कृति 'तहकीक-ए-हिंद', 'किताबुल हिंद' (भारत की खोज) आज भी इतिहासकारों के लिये एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

- सर्वप्रथम 1888 ई. में एडवर्ड साची ने अरबी भाषा से 'तहकीक-ए-हिंद' का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया।
- अरबी लेखकों में अलबरूनी के अतिरिक्त अल-बिलादुरी, सुलेमान, हसन निज़ाम, फरिश्ता, निजामुद्दीन, इब्नबतूता आदि भी प्रमुख हैं।

इब्नबतूता

- इसके द्वारा लिखा गया यात्रा-वृत्तांत 'रेहला' सर्वप्रमुख है, जो अरबी भाषा में रचित है। यह 14 वीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में प्रचुर तथा सबसे रोचक जानकारियाँ देता है।
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे दिल्ली में काजी के पद पर नियुक्त किया। बाद में उसे अपना राजदूत बनाकर चीन भेजा।

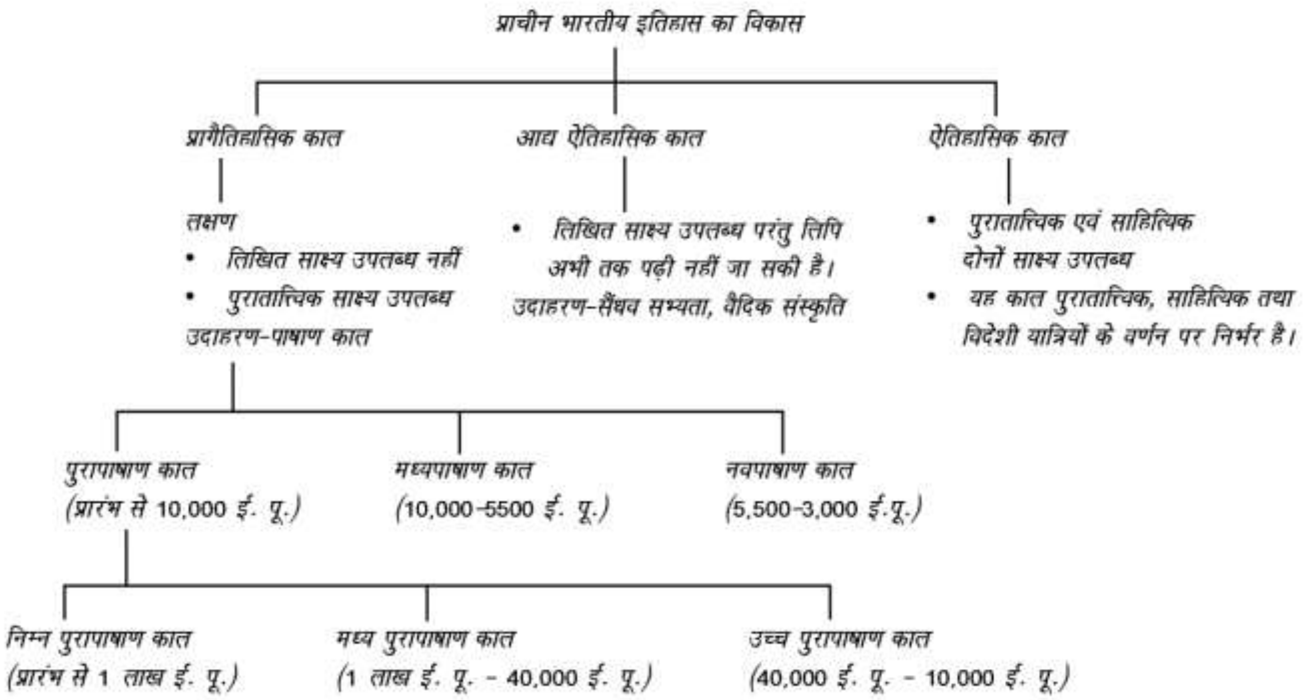

पाषाण युग

भारतीय पाषाणकालीन संस्कृति को विद्वानों ने तीन कालों में विभाजित किया है-पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल तथा नवपाषाण काल। पुरापाषाण संस्कृति का उदय अभिनूतन (Pleistocene) युग में हुआ था।

इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी। भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थर के औज़ारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता ळे-

1- *निम्न पुरापाषाण काल (प्रारंभ से* 1 *लाख ई.पू.)*
2- *मध्य पुरापाषाण काल (*1 *लाख ई.पू. से* 40]000 *ई.पू.)*
3- *उच्च पुरापाषाण काल (*40]000 *ई.पू. से* 10]000 *ई.पू.)*

प्रागैतिहासिक कालः

पुरापाषाण काल

पुरापाषाणकालीन संस्कृति के अवशेष सोहन नदी घाटी, बेलन नदी घाटी तथा नर्मदा नदी घाटी एवं भोपाल के पास भीमबेटकाश नामक चित्रित शैलाश्रयों से प्राप्त हुए हैं।

पूर्वपाषाण काल या पुरापाषाण काल को उपकरणों में भिन्नता के, आधार पर तीन कालों में विभाजित किया गया है-

- *निम्न पुरापाषाण काल*
- *मध्य पुरापाषाण काल*
- *उच्च पुरापाषाण काल*

निम्न पुरापाषाण काल

- इसके उपकरण सर्वप्रथम सोहन नदी (सिंधु नदी की छोटी सहायक नदी) घाटी से प्राप्त हुए, इसी कारण इसे 'सोहन संस्कृति' भी कहा जाता है।
- इस काल में पेबुल, चहपर तथा चहपिंग उपकरणों के साक्ष्य मिलते हैं।
  - पेबुल, पत्थर के वे उपकरण होते थे, जो पानी के बहाव में रगड़ खाकर चिकने और सपाट हो जाते थे।
  - चहपर, बड़े आकार वाला उपकरण है, जो पेबुल से बनाया जाता था।
  - चहपिंग उपकरण द्विधारी होते हैं अर्थात् पेबुल के ऊपर दोनों किनारों को छीलकर उनमें धार बनाई जाती थी।

मध्य पुरापाषाण काल

- इस काल में बहुसंख्यक कोर, फ्लेक तथा ब्लेड उपकरण प्राप्त हुए हैं। फलकों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाण काल को 'फलक संस्कृति' की संज्ञा दी जाती है।
- मध्य पुरापाषाण काल के औज़ारों का निर्माण अच्छे प्रकार के क्वार्टज़ाइट पत्थर से किया गया है।
- मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण महाराष्ट्र में नेवासा, झारखण्ड में सिंहभूमि, उत्तर प्रदेश में चकिया (वाराणसी), बेलन घाटी (इलाहाबाद), मध्य प्रदेश के भीमबेटका गुफाओं तथा सोन घाटी, गजरात में सौराष्ट्र क्षेत्र, हिमाचल में व्यास, वानगंगा तथा सिरसा घाटियों आदि विविध पुरास्थलों से प्राप्त होते हैं।

उच्च पुरापाषाण काल

- इस काल का प्रमुख पाषाणोपकरण ब्लेड (Blade) है। ब्लेड तथा सँकरे आकार वाला वह पाषाण फलक है जिसके दोनों कि समानांतर होते हैं तथा जो लंबाई में अपनी चौड़ाई से दोगना होता है।
- भारत में इस काल के उपकरण सोन घाटी (मध्य प्रदेश) मि. (झारखण्ड), जोगदहा, भीमबेटका, रामपुर, बघेलान, बाघोर (राजस्थान), पटणे, भदणे तथा इनामगाँव (महाराष्ट्र), रेनीगुंटा, वेमला कुर्नूल गुफाएँ (आंध्र प्रदेश), शोरापुर दोआब (कर्नाटक) तथा पुष्कर (राजस्थान) आदि से प्राप्त हुए हैं।

मध्यपाषाण काल

- इस काल के उपकरण अत्यंत छोटे होते थे, इसलिये इन्हें 'माइक्रोलिथ' कहा गया।
- सर्वप्रथम सी.एल. कार्लाइल ने विंध्य क्षेत्र से लघु पाषाणोपकरण खोजे।
- इस काल के प्रमुख केंद्र हैं- बेतवा घाटी, सोन घाटी (मध्य प्रदेश), कृष्णा घाटी (कर्नाटक), बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश), नेवासा (महाराष्ट्र) इत्यादि।
- आदमगढ़ (मध्य प्रदेश) और बागोरे (राजस्थान) से प्राप्त साक्ष्य पशुपालन को दर्शाते हैं। इस काल के लोगों ने सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू पशु बनाया था।
- इस काल में मानव अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) के सराय नाहर राय तथा महदहा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।
- राजस्थान में स्थित सांभर झील निक्षेप, के कई मध्य पाषाणिक स्थल प्राप्त हुए हैं। यहाँ से विश्व के सबसे पुराने वृक्षारोपण का साक्ष्य मिला है।

नवपाषाण काल

- भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीनतम नवपाषाणिक बस्ती मेहरगढ़ (पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित) है, जिसकी तिथि 7000 ई. पू. मानी जाती है।
- इस काल के प्रमुख केंद्र हैं- बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश), रेनीगुंटा (आंध्र प्रदेश), सोन घाटी (मध्य प्रदेश), सिंहभूमि (झारखंड) इत्यादि।
- नवपाषाणकालीन स्थल बुर्जहोम एवं गुफकराल से अनेक गर्तावास, मृद्भांड एवं हड्डी के औजार प्राप्त हुए हैं।
- चिराँद (बिहार) से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण पाये गए हैं जो मुख्य रूप से हिरण के सींगों के हैं। ।
- कोल्डिहवा (इलाहाबाद) से चावल का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- नवपाषाणिक संस्कृति अपनी पूर्वगामी संस्कृतियों की अपेक्षा अधिक विकसित थी। इस काल का मानव न केवल खाद्य पदार्थों का उपभोक्ता था, वरन् उत्पादक भी था। वह कृषि कर्म और पशुपालन से पूर्णतः परिचित हो चुका था।
- यहाँ पाये गए उपकरणों में कुल्हाड़ी, बँसुली, छेनी, खुरपी, कुदाल, हथौड़े आदि प्रमुख हैं।

आद्य ऐतिहासिक काल

- पाषाण युग की समाप्ति के बाद धातुओ के युग का प्रारम्भ हआ। इसी युग को आये ऐतिहासिक काल या धातु काल कहा जाता है।
- हडप्पा संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति की गणना इस काल से की जाती है।
- गैरिक एवं कृष्ण लोहित मृद्भांड इस काल से संबंधित हैं।

ईसा पूर्व एवं ईसवी

वर्तमान में प्रचलित ग्रेगोरियन कैलेंडर (ईसाई कैलेंडर/जलियन कैलेंडर) ईसाई धर्मगुरु ईसा मसीह के जन्म-वर्ष (कल्पित) पर आधारित है। ईसा मसीह के जन्म के पहले के समय को ईसा-पर्व (B.C.-Before the birth of Jesus Christ) कहा जाता है। इसमें वर्षों की गिनती उल्टी दिशा में होती है।

ईसा मसीह की जन्म-तिथि से आरंभ हुआ सन् ईसवी सन कहलाता है, इसके लिये संक्षेप में ई. लिखा जाता है। ई. को लैटिन भाषा के शब्द A.D.(Anno-Domini) में भी लिखा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- In the year of Lord (Jesus Christ)

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ

- इस काल में मनुष्य पत्थर एवं तांबे के उपकरण/औज़ार प्रयोग करने लगा था, इसी कारण इस काल को 'ताम्रपाषाण काल' कहते हैं।
- लगभग 5000 ई.पू. में मनुष्य ने सर्वप्रथम जिस धातु का प्रयोग किया, वह तांबा था।
- ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ कृषक ग्रामीण संस्कृतियाँ थीं।

इस काल की प्रमुख संस्कृतियाँ है-

बनास/अहाड़ संस्कृति (राजस्थान)

- प्रमुख स्थल -अहाड, बालाथल तथा गिलुंद।
- अहाड़ को 'ताम्बवती' भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ बड़े पैमाने पर तांबा मिलता था। इस संस्कृति का कालक्रम 2100-1500 ई. पू. के बीच रखा गया है।
- अहाड़ के लोग पत्थर के बने घरों में रहते थे।
- गिलुद इस संस्कृति का स्थानीय केंद्र माना गया है। यहाँ से पकी ईंटों के निर्माण के साक्ष्य मिले हैं।
- यहाँ से तांबे की बनी कुल्हाड़ियाँ, चूड़ियाँ तथा चादरें प्राप्त हुई हैं।

कायथा संस्कृति (मध्य प्रदेश)

- प्रमुख स्थल - कायथा तथा एरण।
- कायथा के मृद्भाडों पर प्राक्-हड़प्पन, हड़प्पन और हड़प्पोत्तर संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।
- यहाँ से स्टेटाइट और कहर्नेलियन जैसे कीमती पत्थरों के हार प्राप्त हुए हैं।

नोटः एरण अभिलेख से सती प्रथा के प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य मिले हैं।

मालवा संस्कृति

- प्रमुख स्थल - कायथा, एरण तथा नवदाटोली।
- मालवा मृभांड अपनी उत्कृष्टता के लिये जाने जाते हैं।
- नवदाटोली से विभिन्न कृषि फसलों के साक्ष्य मिले हैं।

जोरवे संस्कृति (महाराष्ट्र)

- प्रमुख स्थल - जोरवे, नेवासा, दैमाबाद तथा इनामगाँव।
- दैमाबाद से भारी मात्रा में काँसे की वस्तुएँ मिली हैं। यह हड़प्पा संस्कृति का प्रभाव दिखलाती है। यहीं से गैंडा, हाथी, भैंसा तथा रथ चलाते हुए मनुष्य की आकृति मिली है।
- इनामगाँव ताम्रपाषाण युग की एक बड़ी बस्ती थी। यह बस्ती किला बंद और खाई से घिरी हुई थी।
- 1200 ई. पू. के लगभग ताम्र पाषाणिक संस्कृति का लोप हो गया, केवल जोरवे संस्कृति 700 ई. पू. तक जीवित रही।
- ताम्र पाषाण संस्कृति के विलुप्त होने का कारण बहुत कम वर्षा या सूखा था।

काल	**संस्कृति के लक्षण**	**मुख्य स्थल**	**महत्त्व, उपकरण एवं विशेषताएँ**
निम्न पुरापाषाण काल	शल्क, गँडासा, खंडक उपकरण संस्कति	पंजाब, कश्मीर, सोहन घाटी, सिंगरौली घाटी, छोटा नागपूर, नर्मदा घाटी, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	हस्तकुठार एवं वटिकाश्म उपकरण, होमोइरेक्ट अस्थि अवशेष नर्मदा घाटी से प्राप्त हुए हैं।

मध्य पुरापाषाण काल	फलक संस्कृति	नेवासा (महाराष्ट्र), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश) बाँकुड़ा, पुरुलिया (पश्चिम बंगाल)	फलक, बेधनी, खुरचनी; भीमबेटका से गुफा चित्रकारी मिली है।
उच्च पुरापाषाण काल	अस्थि, खुरचनी एवं तक्षणी संस्कृति	बेलन घाटी, छोटा नागपुर पठार, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	प्रारंभिक होमोसेपियन्स मानव का काल, हार्पुन, फलक व हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं।
मध्यपाषाण काल	सूक्ष्म पाषाण संस्कृति	आदमगढ़. भीमबेटका (मध्य प्रदेश), बागोर (राजस्थान), सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश)	सूक्ष्मपाषाण उपकरण बनाने की तकनीक का विकास, अर्द्धचंद्राकार उपकरण, इकधार फलक, स्थायी निवास का साक्ष्य, पशुपालन।
नवपाषाण काल	पहलिश्ड उपकरण संस्कृति	बुर्जहोम और गुफकराल (कश्मीर). लंघनाज (गुजरात). दमदमा, कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश), चिराँद (बिहार), पोचमपल्ली (तमिलनाडु), मास्की (कर्नाटक)	प्रारंभिक कृषि संस्कृति, कपड़ा बुनना, भोजन पकाना, मृद्भांड निर्माण, मनुष्य स्थायी निवासी बना. पाषाण उपकरणों का पहलिश शुरू, पहिया. अग्नि का प्रचलन।

महापाषाण काल

- नवपाषाण युग की समाप्ति के बाद दक्षिण में जिस संस्कृति का उदय हुआ, उसे महापाषाण काल कहा जाता है। पत्थर की कब्रों को 'महापाषाण' कहा जाता था। इन कब्रों में मानवों को दफनाया जाता था। महापाषाण काल से संबद्ध लोग साधारणतः पहाडों की ढलान पर रहत था दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत तथा कश्मीर में यह प्रथा प्रचलित थी। यहाँ की कब्रों में लोहे के औजार. घोडे के कंकाल तथा पत्थर एक साल के गहने भी प्राप्त हुए हैं।
- महापाषाण काल में आंशिक शवाधान की पद्धति भी प्रचलित थी जिसके तहत शवों को जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ दिया जाता था। ब्रह्मगिरि, आदिचन्नलूर, मास्की, चिंगलपत्तु, नागार्जुनकोंडा आदि इसके प्रमुख शवाधान केंद्र हैं।
- महापाषाणकालीन लोग धान के अतिरिक्त रागी की खेती भी करते थे। इतिहासकारों ने महापाषाण काल का निर्धारण १००० ई. पू.स से लेकर प्रथम शताब्दी ई. पू. के बीच किया है।